पढ़ना है समझना

बरखा

पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए
क्रमिक पुस्तकमाला

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

बरखा

पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए क्रमिक पुस्तकमाला

पहली कक्षा में प्रवेश लेते समय बच्चे अपनी भाषा के बहुत सारे शब्दों के अर्थ जानते हैं। वे चीज़ों को उनके संदर्भ में यानि उनके व्यावहारिक रूप में पहचानते हैं और अपने घर में बोली जा रही भाषा की वाक्य संरचना को भी जानते हैं। स्कूल को यह ठोस भाषायी नींव हरेक बच्चे में तैयार मिलती है। यदि स्कूल इस नींव को आधार बनाकर चले तो सभी बच्चों को चंद महीनों में ही पढ़ना-लिखना सिखाया जा सकता है लेकिन प्रायः ऐसा होता नहीं है। हम सभी इस सच्चाई से वाकिफ़ हैं कि हमारे स्कूलों में आने वाले अधिकतर बच्चे पाठक नहीं बन पाते। पाँचवीं तक आकर भी बहुत सारे बच्चे अक्षर पहचानने पर ही अटके रहते हैं और जो पढ़ना सीख भी लेते हैं, वे सही मायनों में सफल पाठक नहीं बन पाते। पाठक न बन पाने से हमारा आशय है कि बच्चों में पढ़ने की आदत और पढ़ने से मिलने वाली खुशी की लालसा पनप ही नहीं पाती।

स्कूलों की इस निरंतर चल रही गहरी असफलता को हमें अब रोकना है और इसे हम रोक सकते हैं। अगर हम पढ़ना सिखाते समय बच्चों के उस ज्ञान और अनुभव को कक्षा में स्थान दें जिसका ज़िक्र ऊपर किया गया है। ऐसा करने से वे उसी सहजता से पढ़ना सीख जाएँगे, जिस सहजता से वे घर में बोलना सीख चुके होते हैं। स्कूल के शुरुआती कुछ

महीनों में ही हरेक बच्चा समझ के साथ पढ़ना सीख सकता है। ज़रूरत है, स्कूल के प्रयासों में गहनता लाने की और बच्चों को पढ़ना सिखाने की अक्षर पद्धति से आज़ाद होकर एक नए सिरे से सोचने की। इस दिशा में एन.सी.ई.आर.टी. ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। बच्चों की पढ़ना सीखने की नैसर्गिक क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए *बरखा* क्रमिक पुस्तकमाला तैयार की गई है। इस पुस्तकमाला का आधारभूत विचार है कि ***यदि बच्चे शुरू से ही समझ और मज़े के साथ पढ़ें तो वे बहुत ज़ल्दी पढ़ना सीख जाएँगे और सफल पाठक बन पाएँगे।*** क्रमिक पुस्तकमाला एक शिक्षाशास्त्रीय संसाधन है जिससे पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों को पढ़ना सीखने में मदद मिलेगी और उनमें ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ने की ललक जगेगी।

बच्चे पढ़ना कैसे सीखते हैं?

पढ़ने की प्रक्रिया में अनुमान लगाने की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पढ़ना सीख रहे बच्चों को शुरू से ही पाठ्यसामग्री में अनुमान लगाकर पढ़ने के अवसर मिलने चाहिए। आमतौर पर ऐसा होता नहीं है। हमारी शिक्षा व्यवस्था में शुरुआती कक्षाओं में बच्चों को सिर्फ़ अक्षरों को ध्वनियों से जोड़ना सिखाया जाता है। यह मान लिया जाता है कि अक्षरों और ध्वनियों का संबंध बिठाते-बिठाते बच्चे धीरे-धीरे पढ़ने लगेंगे। इस तरीके से बच्चे अक्षर जोड़ते हुए पढ़ना सीख जाएँ तो भी वे पाठक नहीं बन पाते हैं। पढ़ी हुई सामग्री को समझकर, उस पर अपनी राय बना पाना तो बहुत दूर की बात है। इसका एक कारण यह है कि हम पढ़ते समय अनुमान लगाने का प्रशिक्षण देने पर कभी ध्यान ही नहीं देते। बल्कि यदि बच्चा अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास करता है और उसमें कोई गलती करता है तो उसे टोक दिया जाता है।

बरखा के तहत यह प्रयास किया गया है कि बच्चों को इस पुस्तकमाला की कहानियों को पढ़ते समय पाठ्यसामग्री के बारे में अनुमान लगाने के भरपूर मौके मिलें। बच्चे अनुमान लगाते समय अपने अनुभवों, व्यावहारिक ज्ञान और भाषा के मौखिक रूप की जानकारी को उपयोग में ला पाएँगे। इसलिए सारी कहानियाँ बच्चों के दैनिक अनुभवों के आधार पर ही रची गई हैं। पढ़ने के कौशल का बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। बच्चों को जब स्वयं पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलेंगी तो न केवल उनकी पढ़ने की क्षमता विकसित होगी, बल्कि स्कूली ज्ञान के हरेक क्षेत्र में उनको लाभ मिलेगा।

बरखा की कहानियों का स्वरूप

बरखा में चालीस कहानियाँ हैं जो पाँच कथावस्तुओं और चार स्तरों में विभाजित हैं। स्तरानुसार कहानियों में वाक्यों की संख्या एवं कथानकों की गूढ़ता बढ़ती जाती है। प्रत्येक कथावस्तु में दो मुख्य पात्र हैं जिनके द्वारा कहानियाँ प्रस्तुत की गई हैं। जमाल और मदन पड़ोस में रहने वाले दोस्त हैं जो खाने की चीज़ों में बहुत रुचि लेते हैं। इसी तरह रमा और रानी दो बहनें हैं जिनके दैनिक जीवन पर आधारित कहानियों में यह बिंदु उभरता है कि बच्चे अपने आस-पास मौजूद हरेक चीज़ और इंसान से बराबर का रिश्ता महसूस करते हैं और उनसे जुड़ी हर छोटी-से-छोटी बात पर ध्यान देते हैं। काजल और माधव भाई-बहन हैं जिनके दृष्टिकोण से हम बच्चों के उस सुख को महसूस कर सकते हैं जो उन्हें जानवरों और पक्षियों को देखकर तथा उनके साथ रहकर मिलता है। जीत और बबली के द्वारा बच्चों के विभिन्न तरह के खेल और उनसे जुड़ी हुई मज़ेदार तरकीबों के बारे में पता चलता है। तोसिया और मिली दो सहेलियाँ हैं जो किसी भी सामान्य लड़की की तरह अपने आस-पास की हर चीज़ के बारे में जानना चाहती हैं और उसके टूटने या बिगड़ने की चिंता न करके उसमें खेल के मौके ढूँढ़ लेती हैं।

बरखा की कहानियों के चार स्तर हैं। वाक्य संरचना, शब्दों की संख्या, उपकथानकों की संख्या और गहनता के आधार पर इन कहानियों का स्तर निर्धारित किया गया है। जैसे-जैसे स्तर बढ़ता है, वाक्यों एवं कहानी के उपकथानकों की संख्या बढ़ती जाती है।

पहला स्तर – इस स्तर पर दस कहानियाँ हैं। हरेक कथानक की दो-दो कहानियाँ हैं। कहानियों में हरेक पृष्ठ पर एक चित्र और वाक्य दिया गया है। पूरी कहानी में सिर्फ़ एक घटना या समस्या उभरती है। वाक्य संरचना में काफ़ी दोहराव है जिससे बच्चों को पढ़ने में मदद मिलती है।

दूसरा स्तर – इस स्तर पर दस कहानियाँ हैं। इसमें भी हरेक कथानक की दो-दो कहानियाँ हैं। कहानियों में प्रत्येक पृष्ठ पर दो वाक्य हैं और शब्दों की संख्या बढ़ा दी गई है। इसमें भी प्रत्येक पृष्ठ पर चित्र दिए गए हैं। वाक्य संरचना में दोहराव है पर पहले स्तर के मुकाबले थोड़ा कम। इस स्तर पर भी कहानियों में एक ही घटना या समस्या का ज़िक्र है।

तीसरा स्तर – पिछले दो स्तरों की तरह इस स्तर पर भी दस कहानियाँ हैं और हरेक कथानक की दो-दो कहानियाँ हैं। कहानियों में हर पृष्ठ पर तीन वाक्य हैं। कहानियों में एक बड़ी घटना के अंदर दो-तीन छोटी घटनाओं का विस्तार किया गया है। नए शब्दों की संख्या दूसरे स्तर के मुकाबले ज़्यादा है। इसमें भी हरेक पृष्ठ पर चित्र दिए गए हैं।

चौथा स्तर – इस स्तर की दस कहानियों में हरेक पृष्ठ पर एक चित्र और चार वाक्य हैं। कहानी में दो-तीन छोटे-छोटे कथानक हैं जिससे नए शब्दों की संख्या भी बढ़ गई है। कहानी के कथानकों में दोहराव रखा गया है लेकिन वाक्य संरचना में दोहराव बहुत कम है।

बच्चे जब एक स्तर की कहानी पढ़ लेने के बाद अगले स्तर की किताबें उठाएँगे तो खुद उनका मनोबल बढ़ेगा कि त्र

आगे बढ़ें। उन्हें इस बात की छूट होगी कि वे पहले पढ़ी गई किताबों को फिर से दोबारा पढ़ सकते हैं। पढ़ी गई चीज़ को इच्छानुसार बार-बार पढ़ने का शैक्षिक महत्त्व होता है, लेकिन ऐसी छूट स्कूलों में मिलने वाली पाठ्यसामग्री में कम ही मिलती है। ऐसी छूट देने से न केवल बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ता है कि वह पहले पढ़ी हुई चीज़ को बेहतर समझ पाया बल्कि उसको कई अवधारणाओं को नए दृष्टिकोण से समझने का मौका भी मिलता है।

बरखा में बच्चों के रोज़मर्रा के अनुभव

बरखा की कहानियाँ बच्चों के परिवेश और उनके रोज़मर्रा के अनुभवों के इर्द-गिर्द बुनी गई हैं। अपने परिवेश और अनुभवों को कहानियों में पाकर बच्चों को अनुमान लगाते हुए समझकर पढ़ने में मदद मिलेगी। *बरखा* के सभी पात्र छोटे बच्चे हैं जो हमारे पाठक बच्चों की उम्र के ही हैं। कहानियों को रचते समय यह बात सबसे ज़्यादा ध्यान में रखी गई है कि प्रत्येक कहानी ऐसी छोटी-सी चीज़ या घटना पर आधारित हो जो इस उम्र के बच्चों को बहुत महत्वपूर्ण और रोचक लगती है। घटनाओं को बच्चों की नज़र से विस्तारित किया गया है। अगर कोई चीज़ ज़मीन पर गिर जाए तो बच्चे बड़ों की तरह सफ़ाई करने के लिए व्यग्र नहीं होते। चिड़िया का अंडा दिखने पर बच्चों की खुशी की सीमा नहीं रहती और उसे बिल्ली या कुत्तों से बचाने की ज़िम्मेदारी खुद ही महसूस करने लगते हैं। ऐसी स्थितियों में बच्चे जिस तरह के काम करते हैं, वही इन कहानियों का मुख्य तत्व है।

कहानियों में दोहराव

बच्चे अपने आप को कहानियों से जोड़ पाएँ, इसके लिए परिचित संदर्भों का इस्तेमाल किया गया है। कहानी को चित्रों की मदद से समझने के बाद बच्चे जब दोहराए गए वाक्यों पर बार-बार नज़र डालेंगे तो वे स्वत: समझ जाएँगे कि नीचे

क्या लिखा हुआ है। कहानी समझने के साथ-साथ बच्चे कुछ सरल वाक्यों को पढ़ना भी सहजता से सीख जाएँगे। *बरखा* की कहानियों में सभी वाक्य आम बोलचाल की भाषा के हैं। इससे बच्चों को मौखिक और लिखित भाषा में तालमेल बैठाने में मदद मिलेगी। वे सहज रूप से यह जान जाएँगे कि बोली हुई बात को कैसे लिखा जाता है।

चित्रों में कहानी

बरखा के चारों स्तरों की सभी कहानियों में प्रत्येक पन्ने पर एक चित्र दिया गया है। स्कूल के शुरुआती दौर में जब बच्चे लिखित सामग्री नहीं पढ़ पाते हैं, तब भी वे चित्रों की मदद से कहानियों को समझ लेंगे। इस अपेक्षा के साथ *बरखा* में चित्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है। चित्रों को कहानी की घटनाओं तक सीमित नहीं रखा गया है बल्कि उनमें ज़्यादा से ज़्यादा जीवंतता लाने की कोशिश की गई है, जिससे चित्र असली जीवन की झलकियाँ दिखा पाएँ। इससे बच्चों को चित्रों का मज़ा लेने, कहानी समझने और चीज़ों के बारे में बात करने के पर्याप्त अवसर मिलेंगे। चित्रों में बच्चों को गरिमा के साथ प्रस्तुत किया गया है। उनकी बालसुलभता न बढ़ा-चढ़ा कर दिखाई गई है और न ही उसे घटाया गया है। कहानियों में अक्सर बच्चों को रूढ़ रूप में प्रस्तुत किया जाता है पर *बरखा* में बच्चों की प्रस्तुति सामान्य जीवन जैसी ही की गई है। इससे पाठक बच्चे कहानी से बेहतर रूप से जुड़ पाएँगे और पात्रों में अपना प्रतिबिंब ढूँढ़ पाएँगे।

भाषा में नैतिकता एवं मूल्य

यह एक आम मान्यता है कि बच्चों को जो भी पढ़ने के लिए दिया जाए, उससे वे कुछ-न-कुछ सीखें ज़रूर। *बरखा* की संकल्पना और कहानियों की रचना-प्रक्रिया, दोनों स्तरों पर बच्चों को मूल्य सिखाने के वयस्कों के सामान्य आग्रह से

बचने की भरसक कोशिश की गई है। जीवन की सरलता और बच्चों की छोटी–छोटी खुशियों को भाषा में पिरोने का प्रयास किया गया है।

भाषा अपने आप में एक संस्कार है। प्रकाशित सामग्री की भाषा बच्चों के अनुभवों को ज़ुबान दे सके, उनके मन को स्पर्श कर सके, यही उसकी सबसे बड़ी चुनौती है। कौन बच्चा नहीं चाहता कि वह साहसी बने, निर्भीकता से खतरों का सामना करे, कठिन परिस्थितियों में भी न घबराए और बड़ों के सामने अपनी बात दृढ़ता से रख पाए। सभी बच्चे अपने सामान्य जीवन में ऐसे छोटे–छोटे प्रयास करते रहते हैं। बच्चों की इसी अभिलाषा और सहजता को *बरखा* में स्थान दिया गया है।

बरखा की कहानियों में मूल्य इस तरह पिरोए गए हैं कि मानवीय संवेदना स्वयं ही उभर आती है। मिसाल के लिए *तबला* कहानी में जीत का अपने पिता की तबला बजाने की कला को स्वयं सीखने की इच्छा रखना अपने आप में एक बहुत बड़ा मूल्य है। *नानी का चश्मा* कहानी में रमा जिस चिंता और व्यग्रता के साथ अपनी नानी का चश्मा ढूँढ़ती है, उससे एक बुजुर्ग के प्रति एक छोटे बच्चे की संवेदनशीलता उभरती है। *तालाब के मज़े* कहानी में काजल और माधव जब बगुलों को उड़कर जाते हुए देखते हैं और अपने आप को समझाते हैं कि बगुले अगले साल फिर आएँगे तो स्वत: ही इंतज़ार करने, प्रकृति के चक्र को समझने और दूसरे को उसकी इच्छा और ज़रूरतों के साथ स्वीकार करने का मूल्य उभर आता है। इस तरह के मूल्य बच्चों की ज़िंदगी में सहज रूप से शामिल रहते हैं। बच्चों की सहजता, उनकी ईमानदारी, हर समय कुछ नया सीखने की चाह, बड़ों का प्यार पाने की इच्छा और हर काम खुद करने की चेष्टा, उन सबसे बड़े नैसर्गिक संस्कारों और मूल्यों में से हैं जिनके द्वारा अध्यापक और माता–पिता बच्चों के संस्कारों को समझ पाएँगे।

पढ़ने के संसाधन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के तीसरे अध्याय में *बच्चे पढ़ना क्यों नहीं सीखते?* शीर्षक के तहत यह सिफ़ारिश की गई है कि कक्षा में छपी हुई सामग्री की बहुतायत हो, संकेतों, चार्ट, कार्य संबंधी सूचना आदि उसमें लगे हों ताकि विभिन्न अक्षरों की ध्वनियाँ सीखने के साथ वे लिखित संकेतों की पहचान भी कर सकें। आज स्कूली व्यवस्था में इन सभी महत्वपूर्ण तथा उपयोगी संसाधनों का अभाव है, जो बच्चों के विकास के लिए ज़रूरी होते हैं। प्राय: संपन्न वर्गों के बच्चों को ऐसे संसाधन घर पर ही मिल जाते हैं, जैसे– किताबें, पत्रिकाएँ, अख़बार और उनको नियमित रूप से पढ़े जाने की परिवारजनों की आदत। ग्रामीण एवं शहरी निर्धन वर्ग के बच्चों के जीवन में इस तरह के संसाधनों का अभाव रहता है। चालीस किताबों की इस पुस्तकमाला को कक्षा में रखने से संसाधनों के इस अभाव को दूर किया जा सकता है। बच्चों को पुस्तकमाला मिलने से माता–पिता में भी यह विश्वास पैदा होगा कि उनके बच्चों के पास पढ़ने की सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। *बरखा* पुस्तकमाला से बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने की आदत डालने और स्थायी पाठक बनाने में मदद मिलेगी।

शिक्षकों की भूमिका

बरखा पुस्तकमाला इस उद्देश्य के साथ विकसित की गई है कि इससे शिक्षकों को पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं को पूरा करने में मदद मिले। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि पुस्तकमाला पाठ्यपुस्तक नहीं है। इस पुस्तकमाला को एक पूरक सामग्री के रूप में देखा जा सकता है, जो बच्चों को पढ़ने के लिए दी जानी है। शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे

इस क्रमिक पुस्तकमाला को कक्षा में ऐसे स्थान पर रखेंगे जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें। शिक्षक बच्चों को *बरखा* की किताबें पढ़ते रहने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करें। उन्हें कहानियों का परिचय देते रहें और पात्रों तथा चित्रों के बारे में चर्चा करें। यह पुस्तकमाला बच्चों के लिए ही है, इसीलिए बच्चों को देते समय किताबों के फटने या खराब होने की चिंता न करें।

शिक्षकों को यह प्रयास करना है कि बच्चे कहानियों को स्तरवार पढ़ें, यानि पहले स्तर की दस कहानियाँ पढ़ने के बाद वे दूसरे स्तर की कहानियाँ शुरू करें और इस तरह क्रमवार चौथे स्तर तक जाएँ। हालाँकि *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों में बाँटी गई हैं फिर भी शिक्षक इस वर्गीकरण को एक कठोर नियम न मानें और अगर कोई बच्चा चौथे स्तर की किताब पहले उठा लेता है तो उसे डाँटें-फटकारें नहीं। अगर कोई बच्चा एक ही कहानी को बार-बार पढ़ना चाहता है या तीसरे स्तर पर पहुँचने के बाद फिर से पहले स्तर की कहानियाँ पढ़ना चाहता है तो शिक्षक इससे परेशान न हों। ऐसा होना बहुत ही स्वाभाविक है। कुछ कहानियाँ पढ़ लेने के बाद बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ जाता है और बच्चा स्वत: ही उन कहानियों को बार-बार पढ़ने का मज़ा लेना चाहता है, जो उसने पहले पढ़ी थीं। उसे यह आशा रहती है कि इस बार वह उन कहानियों को पहले की तुलना में ज़्यादा अच्छी तरह समझ सकेगा। इसलिए शिक्षक बच्चे की पहले पढ़ी हुई कहानियों को बार-बार पढ़ने की चाह को एक उत्साहवर्धक सूचक की तरह लें। यह चाह इस बात का प्रतीक है कि बच्चा अपने विकास के लिए खुद निर्णय ले रहा है और विश्वास के साथ कदम बढ़ा रहा है। शिक्षकों से उम्मीद है कि वे लचीलापन बरतते हुए बच्चों को *बरखा* की कहानियाँ पढ़ने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा प्रोत्साहित करेंगे।

क्रमिक पुस्तकमाला की कहानियाँ

कथावस्तु	स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3	स्तर 4	चरित्रों के नाम
रिश्ते	रानी भी मुनमुन और मुन्नू	ऊन का गोला हिच हिच हिचकी	मौसी के मोज़े मेरी जैसी	पीलू की गुल्ली नानी का चश्मा	रमा और रानी
पशु-पक्षी कीट-पतंगे	तोता मिठाई	मोनी चिमटी का फूल	कूदती जुराबें तालाब के मज़े	चुन्नी और मुन्नी मिमी के लिए क्या लूँ?	काजल और माधव
वाद्य यंत्र, खेल खिलौने	गुल्ली-डंडा छुपन-छुपाई	जीत की पीपनी आउट	बबली का बाजा झूला	चलो पीपनी बनाएँ तबला	जीत और बबली
आस-पास	मज़ा आ गया मिली का गुब्बारा	हमारी पतंग शरबत	मिली के बाल तोसिया का सपना	मिली की साइकिल पका आम	तोसिया और मिली
खाने की चीज़ें	मीठे-मीठे गुलगुले फूली रोटी	पत्तल चावल	चाय गोलगप्पे	गेहूँ भुट्टा	जमाल और मदन